डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का पाँचवाँ दिन

मीडिया और साहित्य पर परिचर्चा – वर्तमान साहित्य का स्तर भी देखने की जरूरत
नाट्य लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर हुई चर्चा
जो कलाएँ हमें बृहत्तर नहीं बनाती वे व्यर्थ हैं – रामगोपाल बजाज
राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गाँधी' का दूसरा दिन
सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुनीता भुयाँ द्वारा इंडो फ़्यूज़न संगीत

नई दिल्ली, 1 फ़रवरी 2019। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे **साहित्योत्सव** का पाँचवाँ दिन था। आज दो महत्त्वपूर्ण विषयों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। पहली परिचर्चा थी **'मीडिया और साहित्य'** पर जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया। संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखिका एवं पत्रकार वासंती ने की और ए. कृष्णाराव, अनंत विजय, अवनिजेश अवस्थी, मधुसूदन आनंद, रवींद्र त्रिपाठी एवं संजय कुंदन ने अपने विचार व्यक्त किए।

परिचर्चा के पहले वक्ता रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि अगर मैं लेखक या पत्रकार में से यह चुनाव करूँ कि किसको अभिव्यक्ति की ज्यादा स्वतंत्रता है तो मेरा उत्तर लेखक होगा। क्योंकि पत्रकारों को विभिन्न अंकुशों के बीच काम करना होता है। आगे उन्होंने कहा कि प्रिंट पत्रकारिता में जरूर साहित्य का स्थान कम हुआ है लेकिन उसके स्थान पर सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हम साहित्य को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। वरिष्ठ पत्रकार मधुसूदन आनंद ने कहा कि हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का जो शुरुआती इतिहास है उसमें पत्रकारिता और साहित्य के बीच कोई अलगाव नहीं था। अच्छे लेखक ही पत्रकार थे या कहे अच्छे पत्रकार ही लेखक थे। लेकिन उन्होंने आगे यह प्रश्न भी उठाया कि क्या हमारे पास साहित्य के पाठक हैं। अगर साहित्य के पाठक होते तो मीडिया पर उसको प्रकाशित/प्रसारित करने का दवाब जरूरी होता। उन्होंने इस दूरी को पाटने के लिए पुस्तक संस्कृति की जरूरत पर बल दिया। अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि मीडिया बाजार के दवाब में है और उसे साहित्य और संस्कृति विषयों में बहुत ज्यादा रुचि नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि एक समय साहित्य समाज के आगे चलता था लेकिन अब वह उसके पीछे चल रहा है। यह परिस्थितियाँ बदलनी होगी तभी साहित्य मशाल का काम कर पाएगा और उसे तभी अन्य माध्यमों में अपेक्षित स्थान मिल पाएगा। अनंत विजय ने आज के साहित्य पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि आजकल जो कहानी और लिखी जा रही है क्या वो सच में साहित्य के दायरे में आती हैं। उन्होंने कहा कि जब घटिया साहित्य लिखा जाएगा तो उसे छापेगा कौन ? उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अब छपने के लिए ही नहीं बल्कि सिनेमा और टेलीविजन के द्वारा भी लिखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमें यह विलाप बंद करके कि साहित्य छापा नहीं जा रहा के स्थान पर अच्छा लेखन कर उसे प्रकाशन के लिए विवश करना होगा। अंतिम वक्ता संजय कुंदन ने कहा कि आजकल हर अखबार ब्राडिंग के दवाव में या कहे बाजार के दवाब में

. . . 2/–

अपना 'कंटेंट' चुन रहा है और वह यह भी जान रहा है कि साहित्य में भी ब्राडिंग बनने का माद्दा है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता बाजार के साथ हो सकती है लेकिन साहित्य बाजार का हमेशा विरोध करेगा। सत्र की अध्यक्षता कर रही वासंती ने कहा कि मीडिया और साहित्य का रिश्ता एक दूसरे के लिए पूरक का काम कर सकता है अतः हमें दोनों के बीच कुछ जरूरी और समाज को संदेश देने वाले तथ्यों में एकरूपता लानी होगी।

आज की दूसरी परिचर्चा '**नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य**' पर केंद्रित थी जिसका उद्घाटन वक्तव्य रामगोपाल बजाज ने दिया और कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण थे। कार्यक्रम का अध्यक्षीय वक्तव्य चंद्रशेखर कंबार ने दिया। परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता प्रयाग शुक्ल ने की जिसमें आतमजीत, अजित राय, बलवंत ठाकुर, धर्मकीर्ति यशवंत सुमन तथा एन. एहन्जाव मेतेई ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात रंग–व्यक्तित्व रामगोपाल बजाज ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि जो भी कलाएँ हमें बृहत्तर नहीं बनाती वे व्यर्थ हैं। नाटक अपने में कई विधाओं को समेटे हुए है तथा उसका लेखन दलगत राजनीतिक आदि से ऊपर उठकर होना चाहिए अन्यथा वह स्थाई नहीं रहेगा और जल्द ही परिदृश्य से गायब हो जाएगा। उन्होंने नाटक को सरकारी नीतियों में शामिल करने के लिए आह्वान करते हुए कहा कि हम अपनी श्रेष्ठ नाट्य परंपरा तभी बचा पाएँगे। अर्जुनदेव चारण ने कहा कि नाटककार हमेशा वर्तमान को लेकर बातचीत करता है लेकिन उसमें अतीत या भविष्य के ऐसे संकेत जरूर होते हैं जिन्हें कोई भी निर्देशक पकड़ सकता है। उन्होंने कहा कि नाट्य निर्देशकों को भी साहित्य को एक शास्त्र के रूप में पढ़ना और समझना होगा तभी वे उसके रूपांतरण और निर्देशन करते समय उसके साथ न्याय कर पाएँगे केवल यह कहकर पल्ला नहीं झाड़ा नहीं जा सकता कि हिंदी में अच्छे नाटक नहीं है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने युवा निर्देशकों द्वारा उपन्यास या कहानी का निर्देशन स्वयं करने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बहुत गलत प्रक्रिया है और इसे रोका जाना चाहिए। क्योंकि ऐसा करके वे अपनी प्रस्तुतियों को 'विज्युली' तो प्रभावी बना लेते हैं लेकिन उसमें संवाद या नाट्य तथ्य गायब हो जाते हैं। उन्होंने थियेटर को पीपुल के लिए तथा ड्रामा को राइटर से जोड़कर देखने की अपील की।

'**भारतीय साहित्य में गाँधी**' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आज भी जारी रही। आज का प्रथम सत्र जो 'गाँधी और भारतीय कथासाहित्य' पर केंद्रित था की अध्यक्षता एस.एल. भैरप्पा ने की और श्रीभगवान सिंह, मालन वी. नारायणन, प्रबोध पारिख़ तथा जसवंती डिमरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरा सत्र 'विश्व–दृष्टि में गाँधी' की अध्यक्षता सितांशु यशश्चंद्र ने की और चिन्मय गुहा, सीमा शर्मा, जैंसी जेम्स, सी.एन. श्रीनाथ ने अपने आलेख पढ़े। तृतीय सत्र 'आत्मकथाओं में गाँधी' की अध्यक्षता गिरिराज किशोर ने की और उदयनारायण सिंह, बद्रीनारायण, जतिंद्र कुमार नायक तथा मधु सिंह ने अपने आलेख पढ़े। चतुर्थ सत्र 'गाँधी और भक्ति साहित्य' की अध्यक्षता हरिश त्रिवेदी ने की और एस.आर. भट्ट तथा मोहम्मद आज़म ने अपने आलेख पढ़े।

आज सायं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत '**इंडो–फ़्यूज़न संगीत**', सुनीता भुयाँ एवं समूह द्वारा प्रस्तुत किया। सुनीता भुयाँ ने वायलिन पर कई लोकप्रिय धुनों के साथ–साथ गायन भी प्रस्तुत किया।

(के. श्रीनिवासराव)